राष्ट्रमंडल विजेताओं से मिले PM मोदी, भावुक कर देने वाले खुलासे!

विषय सूची (Table of Contents):

>> प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रमंडल खेल विजेताओं का संवाद भारतीय खेलों में एक नए य...
>> भारतीय खेल परिदृश्य में बदलाव का एक दशक...
>> युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत खिलाड़ियों की जीत स्कूली छात्रों के लिए सबसे बड़ा प्...
>> स्कूलों में भाषण से बेहतर है मैदान का पदक...
>> संघर्ष, जज्बा और भावुक कर देने वाले पल एथलीटों ने साझा की अपनी व्यक्तिगत यात्रा...
>> गुरु पूर्णिमा का समर्पण और चोटों पर जीत...
>> भावी पीढ़ियों के लिए स्थायी प्रेरणा...
>> विश्व स्तर पर भारत का बढ़ता दबदबा अब भारतीय खिलाड़ियों से घबराते हैं विदेशी प्र...
>> भारतीय मुक्केबाजों और एथलीटों का भय...
>> खेलो इंडिया और खेल संस्कृति का निर्माण बुनियादी ढांचे से आगे बढ़कर सोच रही सर...
>> अवसंरचना बनाम खेल संस्कृति...
>> कारगिल विजय दिवस पर सेना के एथलीट की ऐतिहासिक जीत देशप्रेम और खेल भावना का अनूठ...
>> सेना के नायकों को समर्पित पदक...
>> छोटे शहरों से अंतरराष्ट्रीय मंच तक का सफर उन्नत खेल सुविधाओं और साई (SAI) का ...
>> स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAI) का पारदर्शी ढांचा...
>> जो खेलता है, वह खिलता है पीएम मोदी ने दीं भविष्य की शुभकामनाएं और मनाया खिलाड...
>> जन्मदिन पर मिठाई और भविष्य की शुभकामनाएं...
>> निष्कर्ष...
>> आपके सवाल, हमारे जवाब...

भारतीय खेल इतिहास में पिछला एक दशक एक अभूतपूर्व परिवर्तन का साक्षी रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने सरकारी आवास पर भारत के राष्ट्रमंडल खेलों (Commonwealth Games) के विजेताओं और एथलीटों का स्वागत करते हुए एक यादगार और प्रेरणादायक संवाद आयोजित किया। पिछले 12 से 13 वर्षों के अपने कार्यकाल के दौरान राष्ट्रीय खिलाड़ियों को बधाई देना और उनका मार्गदर्शन करना प्रधानमंत्री की एक प्रिय और अटूट परंपरा रही है।

इस संवाद के दौरान प्रधानमंत्री ने न केवल खिलाड़ियों की उपलब्धियों को सराहा, बल्कि भारतीय खेलों में आ रहे सकारात्मक बदलावों पर भी विस्तृत चर्चा की। जिस प्रकार देश विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है, ठीक उसी तरह खेल के मैदान में भी भारतीय युवाओं ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का परचम लहराया है। देश में हो रहे सर्वांगीण विकास के साथ-साथ यह संवाद खेल संस्कृति के सशक्तिकरण का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रमंडल खेल विजेताओं का संवाद: भारत

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों के साथ आत्मीय बातचीत की। उन्होंने कहा कि देश के चैंपियनों से मिलना उनके लिए हमेशा ऊर्जावान अनुभव होता है। भारतीय एथलीटों ने अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में जिस तरह से पदकों की झड़ी लगाई है, उसने पूरे देश को गौरवान्वित किया है।

भारतीय खेल परिदृश्य में बदलाव का एक दशक

प्रधानमंत्री ने कहा कि बीते एक दशक में भारत का खेल परिदृश्य पूरी तरह बदल चुका है। अब खिलाड़ी सिर्फ भाग लेने के उद्देश्य से नहीं जाते, बल्कि पोडियम फिनिश (पदक जीतने) के लक्ष्य के साथ मैदान में उतरते हैं। सरकारी नीतियों, पारदर्शी चयन प्रक्रिया और आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं ने खिलाड़ियों के दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया है।

देश के बुनियादी ढांचे और आत्मनिर्भर प्रयासों की चर्चा करते हुए, स्वास्थ्य और अन्य क्षेत्रों में भी बड़े बदलाव देखे जा रहे हैं, जैसेप्रधानमंत्री ने भारत के बढ़ते आत्मनिर्भर चिकित्सा-तंत्र को बल दिया है, ठीक उसी तरह खेल सेक्टर में भी भारत अब आत्मनिर्भर और वैश्विक शक्ति बन रहा है।

युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत: खिलाड़ियों की जीत स्कूली छात्रों

संवाद के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने रेखांकित किया कि जब एक एथलीट अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का तिरंगा फहराता है, तो उसका प्रभाव किसी भाषण या प्रचार अभियान से कई गुना अधिक होता है। एथलीटों की कड़ी मेहनत और मैदान पर उनका प्रदर्शन स्कूली बच्चों के लिए सीधा प्रेरणास्रोत बनता है।

स्कूलों में भाषण से बेहतर है मैदान का पदक

श्री मोदी ने विशेष रूप से कहा, आपका पदक उन्हें (छात्रों को) स्कूलों में जाकर कही गई किसी भी बात से कहीं अधिक प्रोत्साहित करता है। जब बच्चे अपने देश के नायकों को पदक जीतते देखते हैं, तो उनके मन में भी खेल के प्रति एक नया जुनून पैदा होता है।

प्रधानमंत्री ने एक एथलीट के साथ हुई पुरानी बातचीत का स्मरण किया। उस एथलीट ने अपनी बेटियों के खेल में भाग लेने और उनकी प्रगति पर ध्यान देने का वादा किया था। एथलीट ने आगामी राष्ट्रमंडल खेलों में तीन पदक जीतने का आश्वासन भी दिया था। प्रधानमंत्री ने बेटियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन और उनके आत्मविश्वास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे प्रयास देश की नारी शक्ति का भी मान बढ़ाते हैं।

संघर्ष, जज्बा और भावुक कर देने वाले पल: एथलीटों ने साझा की अ

प्रत्येक विजेता खिलाड़ी की सफलता के पीछे वर्षों का कठिन त्याग, व्यक्तिगत संघर्ष और अनगिनत असफलताएं छिपी होती हैं। प्रधानमंत्री के साथ संवाद में खिलाड़ियों ने अपनी इस भावुक और प्रेरणादायक यात्रा के संस्मरण साझा किए।

गुरु पूर्णिमा का समर्पण और चोटों पर जीत

संवाद के दौरान एक एथलीट ने बताया कि उसने गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर अपनी जीत अपने कोच को समर्पित की थी। प्रधानमंत्री ने इस भारतीय परंपरा और गुरु-शिष्य परंपरा के मान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

एक अन्य खिलाड़ी का उदाहरण देते हुए प्रधानमंत्री भावुक हो गए। उन्होंने उस खिलाड़ी के जज्बे को सराहा जो लगातार चार वर्षों तक गंभीर चोटों और व्यक्तिगत पारिवारिक कठिनाइयों से जूझता रहा। जब वह जीत के बाद पोडियम पर खड़ा हुआ और राष्ट्रगान की धुन के साथ राष्ट्रीय ध्वज ऊपर गया, तो उसकी आंखों से आंसू छलक पड़े।

भावी पीढ़ियों के लिए स्थायी प्रेरणा

प्रधानमंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय विजय केवल व्यक्तिगत पदक तक सीमित नहीं होती। श्री मोदी के शब्दों में, आपकी यह जीत आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है। यह जीत आने वाले युवा एथलीटों को यह सिखाती है कि बाधाओं के बावजूद लक्ष्य कैसे प्राप्त किया जाता है।

विश्व स्तर पर भारत का बढ़ता दबदबा: अब भारतीय खिलाड़ियों से घ

अंतरराष्ट्रीय खेल जगत में अब भारतीय एथलीटों का दबदबा स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वैश्विक खेल मंचों पर भारत का रवैया अब आक्रामक और आत्मविश्वास से भरा हुआ है। वैश्विक कूटनीति और वैश्विक समीकरणों में जिस तरह भारत का कद बढ़ रहा है, खेल जगत में भी यही स्थिति देखने को मिल रही है।

वैश्विक परिदृश्य में भू-राजनीतिक बदलावों और वैश्विक प्रभाव को समझते हुए जैसेपुतिन की कहानी: एक जासूस जो 2036 तक करेगा राज!से लेकर अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक उतार-चढ़ाव तक की खबरें चर्चा में रहती हैं, वहीं अंतरराष्ट्रीय खेल मंच पर भी भारतीय एथलीट अपनी मजबूत स्थिति दर्ज करा रहे हैं।

भारतीय मुक्केबाजों और एथलीटों का भय

प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि अब दुनिया के शीर्ष खिलाड़ी भारतीय प्रतिस्पर्धियों के खिलाफ खेलने से पहले रणनीति बदलने पर मजबूर होते हैं। विशेष रूप से भारतीय मुक्केबाजों (Boxers) की साख का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा, विश्व के खिलाड़ी भी अब इन मुक्केबाजों से डरने लगे हैं।

खिलाड़ियों ने भी सरकार की नीतियों और निरंतर मिल रही वित्तीय व ढांचागत सहायता के लिए आभार जताया। एथलीटों ने बताया कि अब प्रतियोगिताओं से पहले एक्सपोजर ट्रिप्स और अंतरराष्ट्रीय कोचिंग की समय पर उपलब्धता से उनका मानसिक मनोबल कई गुना बढ़ जाता है।

खेलो इंडिया और खेल संस्कृति का निर्माण: बुनियादी ढांचे से आ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने खेल प्रोत्साहन के मूल सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि केवल स्टेडियम और जिम बना देना ही काफी नहीं होता, बल्कि पूरे देश में एक जीवंत खेल संस्कृति (Sports Culture) का निर्माण करना अनिवार्य है।

अवसंरचना बनाम खेल संस्कृति

प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि खेल अवसंरचना एक बात है, लेकिन देश में पदक तभी मिलते हैं जब देश में खेल संस्कृति का निर्माण होता है। इसके लिए अभिभावकों, स्कूलों और समाज को खेलों के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना होगा।

उन्होंने खिलाड़ियों को सलाह दी कि वे जैसे-जैसे सफलता की ऊंचाइयों को छूते हैं और खेलो इंडिया (Khelo India) जैसी पहलों का मान बढ़ाते हैं, उन्हें एक निरंतर सीखने वाले विद्यार्थी की विनम्रता बनाए रखनी चाहिए। यही विनम्रता उन्हें लंबे समय तक शीर्ष पर बनाए रखेगी।

कारगिल विजय दिवस पर सेना के एथलीट की ऐतिहासिक जीत: देशप्रेम

इस ऐतिहासिक संवाद में देशभक्ति का एक विशेष पहलू भी सामने आया। प्रधानमंत्री ने भारतीय सेना (Indian Army) के एक एथलीट की विशेष रूप से प्रशंसा की, जिसने कारगिल विजय दिवस के ऐतिहासिक दिन पर अपने पाकिस्तानी प्रतिद्वंद्वी को 5-0 के अंतर से करारी शिकस्त दी थी।

सेना के नायकों को समर्पित पदक

सेना के इस एथलीट ने अपनी इस ऐतिहासिक जीत को भारतीय सेना के अमर नायकों को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि जब खेल की उपलब्धियों के साथ राष्ट्रीय स्वाभिमान और देशभक्ति जुड़ जाती है, तो वह पल असाधारण चमक हासिल कर लेता है।

इस दौरान कुछ हल्के-फुल्के और मनोरंजक पल भी देखने को मिले। एथलीट ने अपने आर्मी ट्रेनर नरेंद्र राणा और नरेंद्र नाम से जुड़े एक मजेदार किस्से को साझा किया, जिस पर प्रधानमंत्री सहित पूरा सभागार हंस पड़ा। पीएम मोदी ने मुस्कुराते हुए कहा, आपने न केवल पदकों की संख्या बढ़ाई है, बल्कि एक पीढ़ी को तैयार किया है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश की रणनीतिक स्थिति और अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं के महत्व को दर्शक विभिन्न खबरों के माध्यम से समझते हैं, जैसे हाल ही में ट्रंप की चाल: भारत को तेल और पाकिस्तान द्वीप प्लान का सच!जैसे मुद्दे अंतरराष्ट्रीय चर्चा में रहे हैं, वहीं भारतीय सेना के जवान खेल के मैदान पर भी देश की सीमाओं जैसा ही पराक्रम दिखा रहे हैं।

छोटे शहरों से अंतरराष्ट्रीय मंच तक का सफर: उन्नत खेल सुविधाओ

भारत के छोटे-छोटे गांवों और कस्बों से निकलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतने वाले खिलाड़ियों का सफर भारतीय खेल प्राधिकरण (Sports Authority of India - SAI) की आधुनिक सुविधाओं के बिना संभव नहीं था।

स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (SAI) का पारदर्शी ढांचा

एक एथलीट ने साई (SAI) द्वारा प्रदान की गई बेहतरीन प्रशिक्षण सुविधाओं और वैज्ञानिक सहायता के लिए केंद्र सरकार का आभार व्यक्त किया। खिलाड़ी ने बताया कि कैसे क्षेत्रीय केंद्रों से मिली मदद ने उन्हें वैश्विक पोडियम तक पहुंचाया।

प्रधानमंत्री ने वाराणसी, भोपाल और उज्जैन जैसे विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों में विकसित की जा रही अत्याधुनिक खेल अवसंरचना की जानकारी ली। खिलाड़ियों ने बताया कि प्रशिक्षण के साथ-साथ उन्हें उज्जैन में महाकालेश्वर और काशी विश्वनाथ जैसे आध्यात्मिक केंद्रों का दर्शन करने का अवसर भी मिला, जिससे उन्हें मानसिक शांति और ऊर्जा प्राप्त हुई।

2018 में शुरू की गई खेलो इंडिया योजना और साई के एकीकृत ढांचे ने देश के दूर-दराज के प्रतिभावान युवाओं को सीधे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं से जोड़ दिया है। प्रधानमंत्री ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा, निश्चिंत रहें, भविष्य में भी आप विजयी होंगे और हम एक बार फिर यहीं मिलेंगे।

जो खेलता है, वह खिलता है : पीएम मोदी ने दी भविष्य की शुभकाम

संवाद का समापन बेहद आत्मीय और पारिवारिक वातावरण में हुआ। इस अवसर पर कई बार अंतरराष्ट्रीय पदक जीत चुकी एक महिला खिलाड़ी का जन्मदिन भी था। प्रधानमंत्री ने संवाद के दौरान ही उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं और आशीर्वाद दिया।

जन्मदिन पर मिठाई और भविष्य की शुभकामनाएं

प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं उस खिलाड़ी को अपने हाथों से मिठाई भेंट की। उन्होंने पूरी भारतीय टीम को सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जीत के इस सिलसिले को बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने हैट्रिक (लगातार तीसरी बार पदक) बनाने वाली टीम को भी अपना विशेष आशीर्वाद दिया।

प्रधानमंत्री ने अपने प्रसिद्ध प्रेरक मंत्र को दोहराते हुए कहा, जो खेलता है, वह खिलता है। उन्होंने सभी एथलीटों से आग्रह किया कि वे आगे आने वाले सभी टूर्नामेंटों में इसी ऊर्जा और प्रतिबद्धता के साथ भाग लें और तिरंगे की शान को विश्व भर में बढ़ाएं।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रमंडल खेलों के विजेताओं के बीच हुआ यह संवाद केवल एक औपचारिक मुलाकात नहीं थी, बल्कि यह भारतीय खेलों के स्वर्णिम भविष्य की रूपरेखा थी। पिछले 12-13 वर्षों में सरकार द्वारा खेल बुनियादी ढांचे, खेलो इंडिया योजना और साई (SAI) के माध्यम से किए गए निरंतर प्रयासों का परिणाम आज पदकों के रूप में देश के सामने है।

छोटे शहरों के युवाओं को मिल रही विश्वस्तरीय सुविधाएं, सेना के जवानों की अनुशासित खेल प्रतिभा और बेटियों का बढ़ता आत्मविश्वास यह साबित करता है कि भारत अब एक वैश्विक स्पोर्ट्स सुपरपावर बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। जब देश का शीर्ष नेतृत्व खिलाड़ियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होता है, तो जो खेलता है, वह खिलता है का मंत्र पूरे राष्ट्र में एक नई क्रांति का सूत्रपात करता है।

आपके सवाल, हमारे जवाब

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 7, लोक कल्याण मार्ग स्थित आधिकारिक आवास पर राष्ट्रमंडल खेलों के पदक विजेताओं का स्वागत किया और उनसे विस्तार से संवाद किया।

प्रधानमंत्री ने कहा कि खिलाड़ियों द्वारा जीता गया पदक स्कूली छात्रों को किसी भी भाषण या सलाह से कहीं अधिक प्रभावी ढंग से प्रेरित करता है और उनमें खेलों के प्रति रुचि जगाता है।

प्रधानमंत्री ने भारतीय सेना के उस एथलीट की सराहना की जिसने कारगिल विजय दिवस के अवसर पर अपने पाकिस्तानी

प्रतिद्वंद्वी को 5-0 से हराकर अपनी जीत देश के वीर जवानों को समर्पित की थी।

खेलो इंडिया योजना की शुरुआत 2018 में हुई थी। इसने जमीनी स्तर पर युवा प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें पारदर्शी तरीके से अंतरराष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण प्रदान करने में अहम भूमिका निभाई है।

SAI खिलाड़ियों को आधुनिक अवसंरचना, वैज्ञानिक कोचिंग, आहार और वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जिससे स्थानीय केंद्रों के खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष स्थान हासिल कर पाते हैं।

इस मंत्र का अर्थ है कि खेल में भाग लेने से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होता है और वह जीवन में निखरता है।

हां, प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि भारतीय मुक्केबाजों की तकनीकी निपुणता और आक्रामक शैली के कारण अंतरराष्ट्रीय प्रतिद्वंद्वी अब उनके खिलाफ खेलने से घबराते हैं।

खिलाड़ियों ने वाराणसी, भोपाल, उज्जैन सहित देश के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों में आधुनिक बुनियादी ढांचे के तहत उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

प्रधानमंत्री ने संवाद के दौरान ही अपना जन्मदिन मना रही कई बार की विजेता महिला एथलीट को मिठाई भेंट की और हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

प्रधानमंत्री के अनुसार, केवल भौतिक बुनियादी ढांचा पर्याप्त नहीं है पदकों की निरंतर सफलता के लिए पूरे देश में व्यापक खेल संस्कृति का निर्माण होना आवश्यक है।

खिलाड़ी और खेल प्रेमी युवा मामले एवं खेल मंत्रालय तथा SAI की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर Latest Update, Winner List PDF और स्कीम में Apply Online संबंधित पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।